

23⁵/₁₈

पकावली आज सुबह कोट पचलेगा में पेश
हूँ। प्रकृत से संबंधित वाद प्रकृत का हितानु
हो चुका है प्रकृत अर्थात् विवेचना का
जारी रखने का कोई अर्थ नहीं है।
अतः प्रकृत प्रकृत अर्थात् विवेचना कर
स्वामीजि सिद्धांत का पकावली प्रकृत
आरंभ होकर प्रकृत से प्रकृत तथा वाद
प्रकृत है।

उपसंहार अधिकारी
उपसंहार अधिकारी